परमेश्वर के क्या गुण हैं?

उसका प्रेम

पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम मसीही लोगों के मनों में चौड़ाई, लम्बाई, गहराई, और ऊंचाई के साथ उंडेले जाने पर परमेश्वर की भरपूरी का ज्ञान होता है (रोमियों 5:5; इफिसियों 3:18, 19)। उसका प्रेम सबसे गहरा प्रभाव डालने योग्य दिमाग़ की किसी भी सोच से बढ़कर मानवीय ज्ञान के पार निकल जाता है। कुछ उदाहरणों से उसके प्रेम के महत्व को समझने में सहायता मिलती है।

पशुओं के प्रति हमारे प्रेम की तरह

''धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, दुष्टों की दया भी निर्दयता है'' (नीतिवचन 12:10)। धर्मी व्यक्ति अपने पशुओं की देखभाल करता है; वह उन्हें आराम, पानी तथा भोजन देता है और हर तरह की असुविधा से बचाकर उनका ध्यान रखता है। पक्षी, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा या बैल पालने वाला ऐसा ही करता है। जैसी चिन्ता व्यक्ति अपने मन में पशुओं के प्रति रखता है वैसी ही चिंता इन्सान के प्रति परमेश्वर रखता है।

घोड़े या खच्चर की झूल ''लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है'' (भजन 32:9)। इन्सानों के लिए परमेश्वर किसी भौतिक रस्सी या डोरी का नहीं, बल्कि ''प्रेम की डोरी'' का इस्तेमाल करता है (होशे 11:4)। घोड़े की लगाम की तरह, परमेश्वर की दयालुता (रोमियों 2:4) मनुष्यों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए होनी चाहिए। बैल के जुए की तरह, मसीह के प्रेम से (2 कुरिन्थियों 5:14) लोग अपने प्रभु के लिए जीने को विवश होने चाहिए। परमेश्वर का प्रेम पशु के मालिकों के अनुभव की तरह है ''जैसे दयालु स्वामी बैलों से जुआ उठाते हैं, [अर्थात] वे इतना पीछे कर देते हैं कि जानवर आराम से चारा खा सकें।''[1] परमेश्वर ने कहा था ''... और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके सामने आहार रख दे, वैसा ही मैंने उनसे किया'' (होशे 11:4)।

बच्चों के प्रति हमारे प्रेम की तरह

यह बात विश्वव्यापी है कि पिता को अपने ही बच्चों के लिए जिम्मेदारी और चिन्ता

का अहसास होना चाहिए। एक बार, जब मूसा का धैर्य जवाब दे गया और वह थक गया, तो उसने तर्क दिया था कि वह इस्राएलियों का पिता नहीं है इसलिए पिता के रूप में उससे उनकी सम्भाल करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। उसने पूछा था, ''क्या ये सब लोग मेरी ही कोख में पड़े थे ? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया जो तू मुझ से चाहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊं जिसके देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजों से खाई है ?'' (गिनती 11:12)। दूसरी ओर, पौलुस ने अपने द्वारा बने मसीहियों के लिए अपने प्रेम को पिता के प्रेम की तरह माना। ''परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है। ... जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम में से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:7-11)।

परमेश्वर ने इस्राएल से अपना प्रेम दिखाने के लिए पिता के प्रेम का उदाहरण इस्तेमाल किया। ''जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया'' (होशे 11:1)। परन्तु, उसका प्रेम एकपक्षीय था। परमेश्वर के भविष्यवक्ता इस्राएल को परमेश्वर के प्रति शुद्ध प्रेम करने के लिए पुकारते रहे; इसके बजाय लोग ''बाल देवताओं के लिए बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिए धूप जलाते गए'' (होशे 11:2)। उन्होंने ऐसा इस तथ्य को जानने के बावजूद किया कि परमेश्वर एक भला पिता है: ''मैं ही एप्रेम को पांव-पांव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था; परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करने वाला मैं हूं'' (होशे 11:3)। अपने पापपूर्ण स्वार्थ के कारण वे यह भी न देख पाए कि परमेश्वर उनकी हर आवश्यकता को पूरा कर रहा था। उसने प्रतिज्ञा की, ''... जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजे हैं उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्या मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं'' (निर्गमन 15:26)। इस्राएल उस प्रेम को समझने में नाकाम रहा जो परमेश्वर उनके प्रति दिखा रहा था: ''... जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के को उठाए चलता है उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हमको इस स्थान पर पहुंचने तक, उस सारे मार्ग में जिससे हम आए हैं, उठाए रहा'' (व्यवस्थाविवरण 1:31)। ऐसा न हो कि हम अपने प्रति उसके प्रेम को न देख पाएं (देखिए 1 यूहन्ना 3:1)।

उसकी दया

याकूब 5:11 कहता है, ''...प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।''

जब प्रथम हत्यारा दया के लिए पुकार उठा था, उस समय भी उसने जो दया से भरा हुआ है उसकी पुकार को सुनकर उसे सुरक्षा के लिए एक चिह्न दे दिया था (उत्पत्ति 4:15)। परमेश्वर ने कभी भी दण्ड देने की इच्छा नहीं की अर्थात वह तो आशीष देना चाहता है।

> प्रभु यहोवा की यह वाणी है, ''क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं, क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित

रहे ?'' ... क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है, ''जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चात्ताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे'' (यहेजकेल 18:23-32)।

2 इतिहास 30 अध्याय में जब दूसरे महीने भी एप्रेम, मनश्शै, इस्साकार, और जबूलून के लोग फसह खाने को तैयार न थे, तो हिजकिय्याह ने उनके लिए प्रार्थना की: ''कि यहोवा जो भला है, वह उन सभों के पाप ढांप दे; जो परमेश्वर की अर्थात अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्र स्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों'' (आयतें 18,19)। आयत 20 में हम पढ़ते हैं, ''और यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया।''

दुर्भाग्यवश, परमेश्वर के अनुग्रह की सुन्दर और सांत्वना देने वाली शिक्षा का दुरुपयोग भी किया जाता है। बहुत से लोगों का कहना है, ''इतना प्रेमी परमेश्वर किसी को भी चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो, हमेशा के लिए आग में जलने नहीं देगा!'' सच्चाई यह है, कि हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर की दया की एक सीमा है। 2 पतरस 2 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि ''परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को, जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें'' (2 पतरस 2:4)। उसने प्राचीन जगत को नहीं छोड़ा (आयत 5) बल्कि भक्तिहीन संसार पर महा जलप्रलय भेजकर उसका अन्त कर दिया। ऐसा करने से उसे दुख तो हुआ, परन्तु यह ज़रूरी भी था।

परमेश्वर ने सदोम और अमोराह को राख में मिला दिया (आयत 6)। क्या वह उन्हें राख में मिलाना चाहता था? उसने इब्राहीम की प्रार्थना बड़ी उत्सुकता से सुनी थी: ''क्या तू उस स्थान को पचास धर्मियों के कारण जो उसमें हों छोड़ देगा?'' ''हां।'' ''पैन्तालीस हों तो?'' ''हां।'' ''चालीस ... तीस ... दस हों तो?'' ''हां।'' इतने भी धर्मी वहां नहीं मिल पाए थे। आकाश से आग और गन्धक आई और वह स्थान एक बहुत बड़ी आग में तबदील हो गया।

परमेश्वर किसी को नरक में नहीं भेजता; वहां जो भी जाता है वह अपने आपको स्वयं ही भेजता है। वहां जाने से रोकने के लिए परमेश्वर जो भी कर सकता है, उसने किया और कर रहा है। उसने तो दुष्ट मनुष्य जाति से इतना प्रेम किया कि उसने अपने इकलौते पुत्र का प्राण तक दे दिया (यूहन्ना 3:16)।

नहीं, नरक का होना परमेश्वर की दया और करुणा के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। यह तो उस कृतघ्नता और घृणा का प्रमाण है जिससे मनुष्य ईश्वरीय करुणा को ठुकराता है और उद्धार नहीं पा सकेगा।

उसकी कोमलता

मसीही लोगों से कहा गया है कि वे ''किसी को बदनाम न करें; झगड़ालू न हों: पर कोमल

स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें'' (तीतुस 3:1, 2)।

जिस गुण को कोमल स्वभाव कहा गया है उसे सब भले लोग पसन्द करते हैं और परमेश्वर को भी यह अच्छा लगता है। इसके विपरीत, आत्मा का फल दिखाने वालों के लिए अशिष्टता के लिए कोई स्थान नहीं है। किसी व्यक्ति के कोमल स्वभाव की बात करते हुए उसके कई अच्छे गुणों अर्थात ईमानदारी, बुद्धि, उदारता, साहस, और दया को शामिल किया जा सकता है। चिन्तनशील और विचारवान होना भी कोमल स्वभाव में गिना जा सकता है।

मसीही लोगों को अपने स्वभाव में कोमलता लाने के लिए कहा जाता है, क्योंकि यह हमारे पिता परमेश्वर का गुण है। यह समझ आ जाने पर कि हम उसके कितने ऋणी हैं जिसने हमें बनाया और हम कितने पापी हैं, हमें लोगों के पास बड़ी कोमलता से जाना चाहिए। दाऊद ने अपनी उन्नति परमेश्वर की दयालुता के लिए यह कहकर दिखाई, ''...तेरी नम्रता ने महत्व दिया है'' (भजन संहिता 18:35)।

कैन से आग्रह करते हुए परमेश्वर ने अपना कोमल स्वभाव दिखाया था: ''तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है? यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है ... और तू उस पर प्रभुता करेगा'' (उत्पत्ति 4:6, 7)।

आइए प्रार्थना करें कि हम और अधिक प्रेम व दया करने वाले और विनम्र बनें जैसे हमारा परमेश्वर हमें बनाना चाहता है।

पाद टिप्पणी

[1]सी. एफ. केल और एफ. डेलिश, *कमेंट्रीज़ ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 10, *माइनर प्रोफेट्स* (ग्रैंड रैपिड्स मिशि.: Wm. B. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., पृ. न.), 138.